ट्रेलरः कांस्टीट्यूशन, केंचुआ और कनफ्यूजन

✍ प्रदीप मिश्र

देश के भविष्य का निर्माता और भाग्यविधाता चुनने के लिए एक और चरण पूरा हो गया। इसमें भी उम्मीदवारों में रंग-तरंग और वोटरों में उमंग नहीं दिखी। समर्थकों में जंग नहीं दिखी। अंदर की खबरें सूंघने वाले गर्व से बताते हैं कि इस बार भी पहले की ही तरह छत्र और क्षत्रप हैं। इनके अपने-अपने जप-तप हैं लेकिन छाया नहीं है। कुछ के पास अकूत संपदा और कुछ के पास फूटी कौड़ी जितनी माया नहीं है। मतदाता खासा उदास हैं। उसे किसी से न ज्यादा की चाहत और न ही जिंदगी बदलने की आस है। रण के पहले चरण में मतदाताओं की संख्या का क्षरण हो रहा है। उम्मीद प्रसाद को भी लगातार कम मतदान की उम्मीद नहीं थी। इसीलिए आंकड़ा सामने आने के बाद उनकी आंखों में नींद नहीं थी। अब उन्होंने अपना कम असंतुष्ट कुमार का एजेंडा ज्यादा बताना शुरू कर दिया है। झूठ की मशीन से प्रचार के बहाने भरमाना शुरू कर दिया है। केंचुआ ने दोनों के तथाकथित आकाओं को नोटिस देने का काम किया है। संविधान का रक्षक दिखाने के लिए प्रेषक के साथ पाने वाले का नाम दिया है।

चुनाव काल और मुद्दों के अकाल में अब सूत्रों से खबर मिलनी बंद हो गई है। सारी खबरें मंगलसूत्र से आ रही हैं। सूत न कपास जुलाहों में लट्ठम लट्ठ हो रहा है। अंधों में काना राजा पहले पहल जादूगर था। बाद में बाजीगर बन गया। वह जांबाज हो गया। लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि जो नहीं होना था, वह आज के आज हो गया। बाजीगर का हौसला बढ़ा और वह सौदागर बन गया। अब वह सितमगर है। कोई कितना भी अगर-मगर करें अच्छी तरह मालूम है कि यह चर्चा डगर-डगर, गांव-गांव और नगर-नगर है। इसीलिए मतदाता मानता है कि जो भी प्राप्त है, उसके लिए पर्याप्त है। इच्छापूर्ति के लिए उसके अपने प्रयास हैं। नेताओं से उसका उतना ही नाता है। जिनके लिए नेता जाना जाता है। गर्मी के मौसम में नेताओं की मोहब्बत यूं ही परवान नहीं चढ़ रही है। जनता जनार्दन की मजबूरी और अपनी मजबूती के लिए ही इनकी काठ की हांडी बार-बार चढ़ रही है। मतदाताओं को पता है कि सबके सब नेता धूर्त हैं। स्वतः स्फूर्त हैं।

घोषणापत्रों में देख लीजिए। युवा हैं तो बेकारी है। सरकारी हो या प्राइवेट एक अदद नौकरी की बेकरारी है। फिलहाल, मत सोचिए कि अग्निवीर कैसे चलाएंगे अर्जुन जैसे तीर। कब समझेंगे बयानवीर। अन्नदाता हैं तो एमएसपी पर सरकार की मक्कारी है। महिलाओं का ध्यान आते ही महंगाई की बुरी तरह याद आती है। वहीं गरीबी आंकड़ों में अकड़-जकड़ कर बार-बार मौत का भ्रम फैलाती है। दोनों आती हैं मगर जाती नहीं...।

4 जून के बाद सरकार कोई बने। सरदार कोई बने। फोन रिचार्ज की कीमत बढ़ जाएगी। तब तक आपके मत से नेताओं की किस्मत बदल जाएगी। अभी जो बात करनी हो, जी भर कर कर लो। उसके बाद आपका मुंह बंद कर दिया जाएगा। फिर सुनना होगा...लो कर लो बात। कारनामा, कारगुजारी, किसान और कुर्सी पर कश्मकश का खात्मा। मिजाजपुर्सी और मातमपुर्सी में एक ही चुनना होगा। सूक्ति भी है-लक्ष्य पाने के लिए खुद पर भरोसा करना बहुत जरूरी है।

यूट्यूब पर क्रांतिकारिता हो रही है। टीवी पर किराए की पत्रकारिता हो रही है। प्रिंट मीडिया चाटुकारिता को ढो रही है। जनता जनार्दन इन सभी को धो रही है। दो चरण में उसने ट्रेलर दिखा दिया है। पिक्चर बाकी है... कहने वाले भी पीछे नहीं हैं। अगली फिल्म थोड़ी-थोड़ी दिखने लगी है। संपत्ति पर आपत्ति विपत्ति का कारण बन रही है। दुनिया समझ रही है कि विकासशील देश को विकसित होने के लिए ऊंचे लोगों की पसंद भी ऊंची होना बाध्यता नहीं है। संविधान बदलने को लेकर वोटर कंफ्यूज हो गया है तो ईवीएम बदनाम हुई...तेरे लिए पर विराम लग गया है। इससे केंचुआ पर संदेह के पाप के साथ-साथ इसे लगे श्राप का कुछ पश्चाताप हो गया है। कांस्टीट्यूशन में बदलाव की अटकलें और आशंकाएं मतलब...राम जाने क्या होगा। असंतुष्ट कुमार कहते हैं कि वेलफेयर न करने वालों का फेयरवेल कर देना चाहिए। उन्होंने एक्सरे भी कर लिया है। भविष्यवक्ता उम्मीद प्रसाद ने इसका रहस्य खोलते हुए एलआईसी जैसा बना दिया है। नहीं समझे...जिंदगी के साथ भी जिंदगी के बाद भी। प्रसार भारती पहले से ही प्रचार भारती है। इसका लोगो बदल कर ठीक किया गया है, क्योंकि जाने से पहले सक्षम व्यक्ति को बिना किसी कनफ्यूजन आ बैल मुझे मार अंतिम इच्छाएं हर हाल पूरी करनी ही चाहिए।

हालात नहीं बदले तो पता नहीं इस तरह का दावा करने वालों को कितने सेंटीमीटर या इंच में शर्म आएगी। शर्म और बेशर्मी को मापने का पैमाना हमारे देश में ही सबसे अच्छा बन सकता है। इसका कॉपीराइट जल्द से जल्द करा लेना चाहिए। इसकी जरूरत इसलिए भी है क्योंकि गारंटी पर जोर है। मतलब उन पर भरपूर भरोसा नहीं है।अर्थात जनता जागरूक हो गई है। इस बार वो चुप है। नेताओं के सामने अंधेरा घुप है। चार जून को या तो चार यार मिलकर जश्न मनाएंगे या एक अकेला सब पर भारी पड़ेगा। अनुमानों के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करनी होगी। मत मानिए कि ज्यादातर ज्योतिषी गाल बजाऊ हो गए हैं। कमाऊ हो गए हैं। उबाऊ हो गए हैं। ओपिनियन पोल से भी अधिक बिकाऊ हो गए हैं। अभी तक टीवी पर इनके दर्शन नही हुए हैं। इनकी समझ, साध और साधना के प्रदर्शन नहीं हुए हैं। परिणाम से पहले डराएंगे या दावों को बताएंगे। बाद में शर्माएंगे नहीं, बहाने बनाएंगे। ध्यान दें कि जीतने वाले कभी बहाने वहीं बनाते और बहाने बनाने वाले कभी जीतते नहीं हैं।

युद्ध थोपे जाते हैं

बठिंडा में साहित्यिक संस्था हस्ताक्षर द्वारा गुलज़ार सिंह संधू रचित पुस्तक गोरी हिरणी के पंजाबी भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद पर एक गहन और विस्तृत विचार चर्चा की गई। गुरबख्श मोंगा और वंदना सुखीजा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ लेखक अनुवादक और विद्वान डॉ परम जीत रमाना ने की। विशिष्ठ अतिथियों में सिरसा से वरिष्ठ लेखक प्रो हर भगवान चावला व डॉ मनिंदर सिंह सिविल सर्जन रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम की शुरुआत पुस्तक पर चर्चा से शुरू हुई।

पुस्तक की विस्तृत चर्चा और समीक्षा सिरसा से आए श्री सुरेश बरनवाल की। पुस्तक के विस्तृत फलक की चर्चा करते हुए उन्होंने आज के दौर में इस पुस्तक के महत्त्व पर प्रकाश डाला। द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका को वर्तमान में विश्व पटल पर घटित हो रही घटनाओं की दृष्टि से देखा गया। फरीदकोट से आए गुरविंदर सैम ने उपन्यास की तमाम कमियों और खूबियों पर प्रकाश डाला। अनुवादक गुरबक्श मोंगा व वंदना सुखीजा ने अनुवाद करने के अपने अनुभवों पर प्रकाश डाला। डॉ परमजीत रमाना ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्व युद्ध के पीछे की मानसिकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस तरह से युद्ध होते नहीं करवाए जाते हैं और दूसरे मायनों में थोपे जाते हैं।

दूसरे सेशन में कवि दरबार करवाया गया। कवि दरबार की शुरुआत तलवंडी साबो से आये नवोदित कवि हसनप्रीत ने की। उनकी कविता की एक पंक्ति : बना के पेंटिंग ओ बस तकदी रहिंदी है अज्ज कल , आपने अन्दर किसे नू जां कि खुद नू भालदी है। इसके बाद जीरकपुर से पधारीं उर्मिल मोंगा ने विभाजन त्रासदी पर कविता बटवारा सुना कर लोगों को भारत पाक विभाजन की पीड़ा पर सोचने को मजबूर कर दिया।

इनके बाद सिरसा से आए पंजाबी कवि सुरजीत सिरडी की कविताओं ने लोगों का ध्यान खूब खींचा। इसी बीच शहर के हरमन प्यारे शायर करण कटारिया ने अपनी गजलों से सबका मन मोह लिया। उनका एक शेर देखिए : मुझ तिश्ना-लब की प्यास का बनता है तब मज़ा आता है जब वो खूवाब में, दरिया पहन-पहन। समय बीतने के साथ साथ काव्य महफ़िल और शबाब पर थी। इनके बाद कविता का परचम सिरसा से आए कवियों ने थाम लिया। सुरेश बरनवाल की कविताओं ने दर्शक दीर्घा में खूब तालियाँ बटोरी।

इसके बाद अपनी शायरी सुनाने पहुंचे उर्दू के शायर लाज पुष्प ने महफ़िल लूट ली। उनका एक शेर देखिए : रेल ने चलने की दी है एक सीटी आखरी और उसके हाथ में हैं मेरी ऊँगली आखरी , अभी तो मेले हुए हैं आके इस मेले में हम और सिर पर आ गई है छुट्टी आखरी।

जमना जैसे दरिया से तुम पानी लेने आए हो , सचमुच प्यासे हो या प्रेम कहानी लेने आए हो।

आखिर में काव्य गोष्ठी के अंतिम कवियों में हरभगवान चावला की कविताओं में रिश्तों की सुन्दर बानगी देखने को मिली और साथ ही सत्ता लोभियों पर सुन्दर कटाक्ष देखने को मिला। उनकी एक कविता का अंश : जब बौने बादशाह होंगें तो तय है कि सभी कद्दावर लोग सिर या पैर से काटकर बौने कर दिए जाएँगे। अंत में अनुवादक और मुख्या अतिथि गुरबक्श मोंगा ने अपनी बात रखी। मीनाक्षी चौधरी द्वारा सारे कार्यक्रम का कुशल संचालन किया गया।

प्रस्तुति- गुरबख्श मोंगा

हिंदी कहानी

शांति

विष्णु सखाराम खांडेकर

सूरज काले बादलों से धीरे-धीरे निकलने लगा था। जंगल में से गुजरने वाली नदी में खड़ा अर्घ्यदान में लीन एक संन्यासी मन-ही-मन कह रहा था- %हे ईश्वर! तुम प्रकाशमान हो! तुम ही धरती पर होने वाले अंधकार के संहारक हो! धरती का अँधेरा तो तुम नष्ट करते हो परंतु इस धरती पर रहने वाले लोगों के मन के अँधेरे को तुम कब दूर करोगे? उसे घट-घट में रमे राम के दर्शन कब होंगे? हे दयानिधान! मुझे विश्वास है कि दुनिया को घेरे अशांति के दावानल को सिर्फ तुम्हीं शांत कर पाओगे। शांति के विधान के लिए

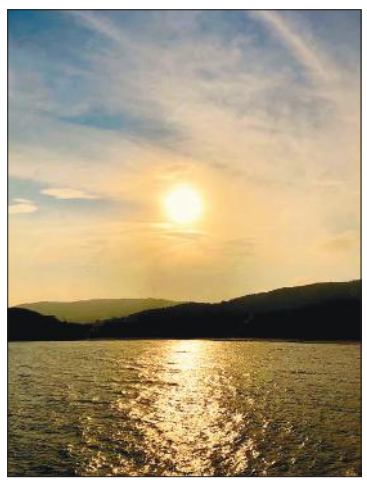

मैं अपना तप, सुख, स्वर्ग और सब-कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार हूँ। कुछ भी करो पर इस दुनिया में अमन, शांति का साम्राज्य फैला दो। मैं ऐसी सुंदर दुनिया देखना चाहता हूँ, जहाँ सिंह की पीठ पर खरगोश खेलता हो, उकाब की गोद में साँप सोया हो और सभी जन एक हों।%

उसी समय एक चील अपने घोंसले से झाँककर सूरज को देख रही थी। सूरज के दर्शन से उसे बेहद प्रसन्नता हुई। शायद उसे मुर्गी के छोटे, पिलपिले चूज़ों का स्मरण हो आया था।

उसका चकुला पीछे से आकर उसकी गोद में दुबकने का प्रयास करने लगा। उसे चूमकर चील बोली, देखो बेटे, अब आखेट का समय हुआ। मैं पलभर में लौट आऊँगी। कल तुम अपने घोंसले से निकलने की कोशिश कर रहे थे, प्यारे! शायद तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे पंख अब भी कमज़ोर हैं। तुम सामने वाला वह जो नीला आकाश देखते हो न, वहाँ एक डायन हमेशा दाँव लगाकर बैठी रहती है। वह तुम्हारे जैसे मासूम चकुलों को इशारा करके अपनी ओर बुलाती है और फिर ठगकर उन्हें अपने घोंसले में भगा ले जाती है। गीत गाकर वह तुम्हें बहकाएगी, बादलों में छिपे सुंदर हाथी, घोड़ों का वह तुम्हें प्रलोभन दिखाएगी; पर देखो बेटे! एक बात याद रखना, चकुलों को ठगकर उनका पिलपिला मांस खाने वाली दुष्ट डायन है यह! उसकी बातों में मत आना। मेरी कसम, तुम अपने घोंसले से मत निकलना! मैं आज तुम्हारे लिए सुंदर-सा सँपोला लाऊँगी, समझे! मेरी बातों का खयाल रखना, भूलना नहीं।

सँपोला माने? चकुले ने प्रश्न किया।

सँपोला छोटा होता है। उसे पकडना आसान होता है। मात्र बखान से थोडी समझ में आएगा! बेहतर है कि बड़े होने पर तुम उसे खुद पकड़कर देख लेना...।

उस सँपोले की माँ नहीं होती? चक्ले ने पूछा।

चील मौन रह गई। यदि तुम उसे पकड़ोगी, तो क्या उसकी माँ नहीं रोएगी?

तुम कितने मासूम हो मेरे बच्चे! अरे पागल, साँप की और हमारी जाति अलग-अलग है। उनका और हमारा खून भी अलग है बेटे! उसके साथ हमारी दुश्मनी तो सदियों पुरानी है।

दुश्मनी से मतलब?

साँप चील का बैरी होता है।

बैरी माने?

बैरी को मारा जाता है।

क्यों?

पेट के लिए।

फिर हम कुछ और खा लें तो...।

पागल कहीं के! तुम्हें जंगल के उस संन्यासी की संतान होना चाहिए था। लगता है, तुम गलती से मेरी कोख में आ गए हो। अपने चकुले को फिर प्यार से चूमकर चील ने आकाश में छलाँग लगाई। फिर अचानक वह धरती की ओर चली। मानो आकाश से धरती की ओर आने वाला कोई वायुयान हो।

उसी समय एक भील धनुष-बाण लेकर अपनी झोंपड़ी से निकल रहा था। अपने इकलौते, प्यारे बेटे को चूमकर बोला, कल तुम अपने घर में निकलकर जंगल में रंग-बिरंगे फूलों को बटोरते दूर तक भटक रहे थे न? आज वैसी हरकत मत करना। जंगल के इन झाड़-झंखाड़ों में जहरीले साँप होते हैं। उनके काटने का डर हमेशा बना होता है। अपना खयाल रखना।

पर बाबा...

पर-वर कुछ नहीं। कल तूने चकुला लाने की ज़िद की थी न? आज मैं उसे पकड़कर ज़रूर ला दूंगा। फिर तू उसे जीभर देख लेना और उससे खेलना। मंजूर?

क्या उसके माँ नहीं होती? बेटे ने पूछा।

पागल, बिना माँ के चकुला थोड़े होगा?

फिर मेरे लिए वह चकुला मत लाओ। यदि तुम उसे पकड़ोगे, तो उसकी माँ रोएगी। कल जब मैं रास्ता भूल गया था, तो रो-रोकर माँ की आँखें सूज आई थीं।

प्यार से थपथपाकर भील ने उसे समझाया, तुम्हें जंगल के उस संन्यासी की संतान होना चाहिए था। गलती से तुमने मेरे यहाँ जन्म लिया। अरे पागल, मनुष्य और पंछी की जाति एक थोड़े ही है? जाओ, धनुष-बाण से खेलो। भागो!

अपने बेटे के कंधों को प्यार से थपथपाकर भील शिकार के लिए निकल पड़ा। वह तीर-कमान सँभालता हुआ तेज़ी से बढ़ने लगा। मानो कोई मुस्तैद सैनिक अपनी मातृभूमि की रक्षा की धुन में निकल पड़ा हो! उसी समय सँपोले ने अपनी माँ से कहा, देखो माँ, धूप तेज़ हो चुकी है। चलो, हम अपने घर चलें।

माँ गुस्से में थी। बोली, नहीं। और थोड़ी देर रुक जाओ। भील के आने का समय हो चुका है। उसे काटे बगैर मुझे चैन नहीं आएगा।

उसने कल तुम्हें गलती से कुचला होगा। इतनी-सी बात पर तुनक जाना ठीक नहीं। मैं तो तुम्हारे शरीर पर कितनी बार कूदता-फाँदता रहता हूँ।

तुम निपट पागल हो बेटे! तुम्हें जंगल के उस संन्यासी की संतान होना चाहिए था। गलती से तुम मेरी गोद में आए।

यदि तुम उसे काटोगी, तो क्या उसका बेटा नहीं रोएगा? सँपोले ने माँ से प्रश्न किया। भले रोए! उससे मेरा क्या बिगड़ेगा? मनुष्य की और हमारी जाति एक थोड़े ही है!

इतने में सामने वाली झाड़ी से पत्तों की चरमराहट सुनाई दी। आहट पाते ही साँपिन ने सँपोले से कहा, मैं अभी पलक मारते आ जाऊँगी। तू अपना खयाल रखना। सतर्क रहना। झाड़-झंखाड़ों की छाया को छोड़कर बाहर मत जाना। समझे!

पत्तों की चरमर जारी थी। अपने बच्चे को प्यार से सहलाकर साँपिन आवाज़ की दिशा में रेंगती हुई चल पड़ी, मानो टेढ़े-मेढ़े रास्ते से समुंदर की ओर बढ़ने वाली नदी हो!

भील तो चील के घोंसले की खोज में मग्न था। चोरी-छिपे साँपिन भील का पीछा कर रही थी। उसने आकाश की ओर ताका। एक चील अपनी पैनी नज़रों से धरती की ओर कुछ तलाशती हुई आकाश में तैर रही थी। साँपिन रोमांचित हो उठी। उसके समूचे शरीर पर रोंगटे खड़े हो गए। वह तुरंत पास की घनी झाड़ी में छिप गई।

थोड़ी देर बाद जब उसने झाड़ी से बाहर झाँककर देखा, तब उसे मालूम हुआ कि चील आसमान को चूमने की ललक लिए ऊपर की ओर बढ़ रही थी। उसने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई। भील का कहीं नामोनिशान नहीं था। गुस्से में फुफकारती हुई वह भील की तलाश में इधर-उधर घूमने लगी।

उसका बच्चा उसके पीछे दौड़ रहा था, इसका उसे पता नहीं था। भील का लड़का भी अपने बाप का अनुगामी बन गया था। आकाश के आकर्षण से चील के चकुले ने भी कब की छलाँग लगा दी थी। माँ-बाप के उपदेशों के बावजूद स्वच्छंद विचरना जीवन-क्रम की एक अभिन्न परंपरा ही रही है।

भील आसमान की ओर नज़र गड़ाकर खड़ा था। अचानक उसे चील का चकुला नज़र आया। धनुष से तीर छूटा। उसी वक्त साँपिन ने उसे काटा।

दूसरे ही क्षण सँपोले पर चील टूट पड़ी।

शांति का परम उपासक संन्यासी अर्घ्यदान से निवृत्त होकर अपनी पर्णकुटी की ओर लौट रहा था कि दूर से उस दृश्य को देखकर पलभर उसे अपनी साधना-सिद्धि पर प्रसन्नता हो आई। पलभर सारे सजीवों में बंधुता निर्माण करने की अपनी माँग पूरी होने का उसे भ्रम हुआ। चील, साँप और आदमी एक-दूसरे की बगल में सोए थे। साँप को न चील का डर, न आदमी को साँप का। कितना सुंदर, मंगल दृश्य था वह! मेरी तपस्या की ही विजय है यह! आँखें मूंदकर हाथ जोड़ते हुए ईश्वर को संबोधित करते हुए वह बोला, हे ईश्वर! तुम्हारी लीला अगाध है! धन्य हो तेरी...

वह आगे बढ़ा और सहसा चौंक उठा। उसके रोंगटे खड़े हो गए। जैसे ही उसने तीनों का शव देखा, वह सकपका गया। उसने देखा- एक आदमी, चील का एक चकुला और साँप का एक बच्चा।

उसके हाथ से कमंडल छूट गया। अब आकाश की ओर देखने का उसमें साहस तक नहीं रहा। शर्मिंदा होकर उसने अपनी आँखें धरती में गड़ाई। उसकी आँखें धीरे-धीरे बरसने लगीं।

हमें 'सृजन' पेज के संबंध में आपकी राय का स्वागत है। साथ ही आपकी अप्रकाशित रचनाओं का इंतजार रहेगा। अपनी रचनाएं और राय हमें *jagmargnews@gmail.com* पर भेजें।

पाश की कविताएं

हम लड़ेंगे साथी

मौसम के लिए
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए
हम चुनेंगे साथी, ज़िन्दगी के टुकड़े
हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर
हल अब भी चलता हैं चीख़ती धरती पर
यह काम हमारा नहीं बनता है, सवाल नाचता है
सवाल के कन्धों पर चढ़कर
हम लड़ेंगे साथी
क़त्ल हुए जज़्बों की क़सम खाकर
बुझी हुई नज़रों की क़सम खाकर
हाथों पर पड़े गाँठों की क़सम खाकर
हम लड़ेंगे साथी
हम लड़ेंगे तब तक
जब तक वीरू बकरिहा
बकरियों का पेशाब पीता है
खिले हुए सरसों के फूल को
जब तक बोने वाले ख़ुद नहीं सूँघते
कि सूजी आँखों वाली
गाँव की अध्यापिका का पति जब तक
युद्ध से लौट नहीं आता
जब तक पुलिस के सिपाही
अपने भाइयों का गला घोंटने को मज़बूर हैं
कि दफ़्तरों के बाबू
जब तक लिखते हैं लहू से अक्षर
हम लड़ेंगे जब तक
दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाक़ी है
जब बन्दूक न हुई, तब तलवार होगी
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की ज़रूरत होगी
और हम लड़ेंगे साथी
हम लड़ेंगे
कि लड़े बग़ैर कुछ नहीं मिलता
हम लड़ेंगे
कि अब तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे
अपनी सज़ा कबूलने के लिए
लड़ते हुए मर जाने वाले की
याद ज़िन्दा रखने के लिए
हम लड़ेंगे

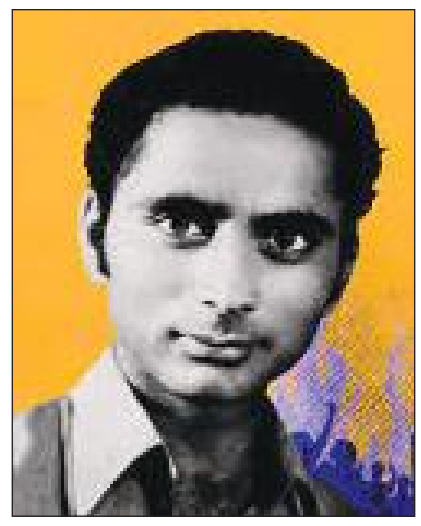

भारत

भारत
मेरे सम्मान का सबसे महान शब्द
जहाँ कहीं भी प्रयोग किया जाए
बाक़ी सभी शब्द अर्थहीन हो जाते है
इस शब्द के अर्थ
खेतों के उन बेटों में है
जो आज भी वृक्षों की परछाइओं से
वक़्त मापते है
उनके पास, सिवाय पेट के, कोई समस्या नहीं
और वह भूख लगने पर
अपने अंग भी चबा सकते है
उनके लिए ज़िन्दगी एक परम्परा है
और मौत के अर्थ है मुक्ति
जब भी कोई समूचे भारत की
राष्ट्रीय एकता की बात करता है
तो मेरा दिल चाहता है --
उसकी टोपी हवा में उछाल दूँ
उसे बताऊँ
के भारत के अर्थ
किसी दुष्यन्त से सम्बन्धित नहीं
वरन खेत में दायर है
जहाँ अन्न उगता है
जहाँ सेंध लगती है

अब विदा लेता हूं

मेरी दोस्त, मैं अब विदा लेता हूँ
मैंने एक कविता लिखनी चाही थी
सारी उम्र जिसे तुम पढ़ती रह सकतीं
उस कविता में
महकते हुए धनिए का ज़िक्र होना था
ईख की सरसराहट का ज़िक्र होना था
उस कविता में वृक्षों से टपकती ओस
और बाल्टी में दुहे दूध पर गाती झाग का ज़िक्र होना था
और जो भी कुछ
मैंने तुम्हारे जिस्म में देखा
उस सब कुछ का ज़िक्र होना था
उस कविता में मेरे हाथों की सख़्ती को मुस्कुराना था
मेरी जाँघों की मछलियों को तैरना था
और मेरी छाती के बालों की नरम शॉल में से
स्निग्धता की लपटें उठनी थीं
उस कविता में
तेरे लिए
मेरे लिए
और ज़िन्दगी के सभी रिश्तों के लिए बहुत कुछ होना था
मेरी दोस्त
लेकिन बहुत ही बेस्वाद है
दुनिया के इस उलझे हुए नक़्शे से निपटना
और यदि मैं लिख भी लेता
शगुनों से भरी वह कविता
तो वह वैसे ही दम तोड़ देती
तुम्हें और मुझे छाती पर बिलखते छोड़कर
मेरी दोस्त, कविता बहुत ही निसत्व हो गई है
जबकि हथियारों के नाखून बुरी तरह बढ़ आए हैं
और अब हर तरह की कविता से पहले
हथियारों के ख़िलाफ़ युद्ध करना ज़रूरी हो गया है
युद्ध में
हर चीज़ को बहुत आसानी से समझ लिया जाता है
अपना या दुश्मन का नाम लिखने की तरह
और इस स्थिति में
मेरी तरफ चुम्बन के लिए बढ़े होंठों की गोलाई को
धरती के आकार की उपमा देना
या तेरी कमर के लहरने की
समुद्र की साँस लेने से तुलना करना
बड़ा मज़ाक-सा लगता था
सो मैंने ऐसा कुछ नहीं किया
तुम्हें
मेरे आँगन में मेरा बच्चा खिला सकने की तुम्हारी
ख़्वाहिश को
और युद्ध के समूचेपन को
एक ही कतार में खड़ा करना मेरे लिए संभव नहीं हुआ
और अब मैं विदा लेता हूँ
मेरी दोस्त, हम याद रखेंगे
कि दिन में लोहार की भट्टी की तरह तपने वाले
अपने गाँव के टीले
रात को फूलों की तरह महक उठते हैं
और चांदनी में पगे हुई ईख के सूखे पत्तों के ढेरों पर लेट कर
स्वर्ग को गाली देना, बहुत संगीतमय होता है
हाँ, यह हमें याद रखना होगा क्योंकि
जब दिल की जेबों में कुछ नहीं होता
याद करना बहुत ही अच्छा लगता है
मैं इस विदाई के पल शुक्रिया करना चाहता हूँ
उन सभी हसीन चीज़ों का
जो हमारे मिलन पर तम्बू की तरह तनती रहीं
और उन आम जगहों का
जो हमारे मिलने से हसीन हो गई
मैं शुक्रिया करता हूँ
अपने सिर पर ठहर जाने वाली
तेरी तरह हल्की और गीतों भरी हवा का
जो मेरा दिल लगाए रखती थी तेरे इन्तज़ार में
रास्ते पर उगी हुई रेशमी घास का
जो तुम्हारी लरजती चाल के सामने हमेशा बिछ जाता था
टींडों से उतरी कपास का
जिसने कभी भी कोई उज़्र न किया
और हमेशा मुस्कराकर हमारे लिए सेज बन गई
गन्नों पर तैनात पिद्दियों का
जिन्होंने आने-जाने वालों की भनक रखी
जवान हुए गेहूँ की बालियों का
जो हम बैठे हुए न सही, लेटे हुए तो ढंकती रही
मैं शुक्रगुजार हूँ, सरसों के नन्हें फूलों का
जिन्होंने कई बार मुझे अवसर दिया
तेरे केशों से पराग-केसर झाड़ने का
मैं आदमी हूँ, बहुत कुछ छोटा-छोटा जोड़कर बना हूँ
और उन सभी चीज़ों के लिए
जिन्होंने मुझे बिखर जाने से बचाए रखा
मेरे पास आभार है
मैं शुक्रिया करना चाहता हूँ
प्यार करना बहुत ही सहज है
जैसे कि जुल्म को झेलते हुए ख़ुद को लड़ाई के लिए
तैयार करना
या जैसे गुप्तवास में लगी गोली से
किसी गुफ़ा में पड़े रहकर
ज़ख़्म के भरने के दिन की कोई कल्पना करे
प्यार करना
और लड़ सकना
जीने पर ईमान ले आना मेरी दोस्त, यही होता है
धूप की तरह धरती पर खिल जाना
और फिर आलिंगन में सिमट जाना
बारूद की तरह भड़क उठना
और चारों दिशाओं में गूँज जाना -
जीने का यही सलीका होता है
प्यार करना और जीना उन्हे कभी नहीं आएगा
जिन्हें ज़िन्दगी ने बनिया बना दिया
जिस्म का रिश्ता समझ सकना,
ख़ुशी और नफ़रत में कभी भी लकीर न खींचना,
ज़िन्दगी के फैले हुए आकार पर फ़िदा होना,
सहम को चीरकर मिलना और विदा होना,
बड़ी शूरवीरता का काम होता है मेरी दोस्त,
मैं अब विदा लेता हूँ
तू भूल जाना
मैंने तुम्हें किस तरह पलकों में पाल कर जवान किया
कि मेरी नज़रों ने क्या कुछ नहीं किया
तेरे नक़्शों की धार बाँधने में
कि मेरे चुम्बनों ने
कितना खूबसूरत कर दिया तेरा चेहरा कि मेरे आलिंगनों ने
तेरा मोम जैसा बदन कैसे साँचे में ढाला
तू यह सभी भूल जाना मेरी दोस्त
सिवा इसके कि मुझे जीने की बहुत इच्छा थी
कि मैं गले तक ज़िन्दगी में डूबना चाहता था
मेरे भी हिस्से का जी लेना
मेरी दोस्त मेरे भी हिस्से का जी लेना।